आयुर्वेद आरोग्यता की गारंटी : प्रो. सिंह

गोरखपुर (एसएनबी)। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ तथा ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत शुक्रवार को आयुर्वेद सम्पूर्ण आरोग्यता की गारंटी विषयक संगोष्ठी हुई। मुख्य वक्ता आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद शरीर रूपी मशीन को संचालित करने के लिए एसओपी बताता है, साथ ही शरीर के आरोग्यता की गारंटी भी देता है। भारत में हजारों वर्ष पूर्व से यह चिकित्सा पद्धति सफलता पूर्वक चलाई जा रही है। बीच में हम इससे दूर हो गए थे किंतु वर्तमान सरकार के प्रयत्न से धीरे-धीरे उस प्राचीन पद्धति की ओर लौट रहे हैं।

गोरखनाथ मंदिर में साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अन्तर्गत आयुर्वेद सम्पूर्ण आरोग्यता की गारंटी विषयक संगोष्ठी

उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में वैद्य का स्थान गुरुतुल्य बताया गया है। शास्त्रों में देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का रक्षण करने के साथ ही रोगी के उपचार की विधि बताता है। हमारे जीवन में आहार की विधि और पथ्य-अपथ्य का सम्यक विचार किया गया है। एक अध्ययन में पूरे विश्व में भारतीय थाली को सर्वश्रेष्ठ और पौष्टिकता युक्त थाली बताया गया है।

सवाई आगरा से आए ब्रह्मचारी दासलाल ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है। माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना के पश्चात जीवों को स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद का ज्ञान प्रदान किया था। हमारे शरीर में वात, पित्त और कफ त्रिदोष होते हैं। इनको अपने आहार विहार से समान रखने से रोग नहीं होते हैं। कटक उड़ीसा के महंत शिवनाथ ने कहा कि आयुर्वेद से योग को अलग नहीं किया जा सकता। आसन, प्राणायाम और संतुलित दिनचर्या स्वस्थ रहने के सबसे उपयोगी साधन हैं। आयुर्वेद दवाओं से अधिक परहेज पर ध्यान देता है।

विशिष्ट वक्ता गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान सोनबरसा के प्रधानाचार्य डा. मंजूनाथ ने कहा कि स्वास्थ्य का स्वस्थ रक्षण करना ही आयुर्वेद है। आरोग्यता अर्थात हमारे शरीर के सभी अंग, सभी इंद्रिय अपने-अपने कार्य सही ढंग से करते रहें। आयुर्वेद में न केवल हमारे स्थूल शरीर के स्वस्थ रहने की बात की जाती है अपितु हमारा मन कैसे प्रसन्न व स्वस्थ रहेगा उसके उपाय पर भी विचार करता है। हमारी आरोग्यता में दिनचर्या का भी बहुत महत्व है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष व पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा कि आयुर्वेद विश्व की सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है। यह पूर्णतया प्राकृतिक और आध्यात्मिक है। इस पद्धति में हमारे पर्यावरण में विद्यमान वनस्पतियों, औषधियों व तत्वों के माध्यम से ही रोगों का उपचार बताया गया है। कोई ऐसी वनस्पति नहीं है जो औषधि के रूप में न हो। इस अवसर पर गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, कालीबाड़ी के महन्त रविन्द्र दास, महंत संतोषदास सतुआ बाबा, महंत पंचाननपुरी मंचासीन रहे।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ व राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन कुलपति आयुष विवि प्रो. एके सिंह, ब्रह्मचारी दासलाल, महंत शिवनाथ, डा. मंजूनाथ व अन्य।

सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व

गोरखपुर (एसएनबी)। ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ तथा ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की पुण्यतिथि के अवसर पर गोरखनाथ मंदिर में आयोजित साप्ताहिक श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन कथाव्यास श्री कृष्णचंद्र शास्त्री ठाकुर ने कहा कि सनातन धर्म भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व है। इस धर्म के चार स्तंभ हैं हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिख। इन चारों संप्रदायों में कोई वास्तविक भेद नहीं है। यह सब सनातन संस्कृति को मानने वाले हैं। भगवान बुद्ध हों, भगवान महावीर हों या गुरु नानक देव हों सभी भगवान विष्णु ही हैं। सब उन्हीं की भक्ति करते हैं। दुनिया के सभी पापों का सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित यदि कोई है तो वह है भगवान की भक्ति।

गोरखनाथ मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा का चौथा दिन

गोरखनाथ मंदिर में आयोजित श्रीमद भागवत कथा में उपस्थित कथा व्यास कृष्णचंद शास्त्री व श्रद्धालु।

उन्होंने कहा कि भगवान की कृपा से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। जीव की जितनी क्षमता पाप करने की है, उससे अनंत गुना क्षमता भगवान के नाम में पाप को नष्ट करने की है। कथा व्यास ने भारतीय संस्कृति में नारी महिमा बताते हुए कहा कि हमारे शास्त्रों में विवाह के बाद पत्नी का त्याग करना सबसे बड़ा जघन्य अपराध है। सनातन धर्म में तलाक नाम की कोई चीज नहीं है। यहां तो पति-पत्नी का साथ सात जन्मों का संबंध होता है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष की संपूर्ण भूमि तीर्थ क्षेत्र है। जन्म जन्मांतर का पुण्य उदय होने पर यहां जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है। उसमें भी अयोध्या धाम तथा मथुरा वृंदावन धाम का तो कण कण तीर्थ है। कथा व्यास ने कहा कि हमें अपने बच्चों का नाम भगवान के नाम से मिलता-जुलता रखना चाहिए, उसके बहाने जाने-अनजाने में हम भगवत-नाम का संकीर्तन करते रहेंगे। हम संकेत में नाम लें अथवा पुकार कर नाम लें, काम तो करेगा ही। भगवान का किसी भी प्रकार से नाम लेंगे, भगवान जरूर सुनते हैं।